# PAPER - 2, UNIT - I भाग - II

# Theories of mountain Building of Kober

जब सम्पीडन का बल सर्वाधिक सक्रिय होता है तो भूसन्नति का समस्त मलबा वलित हो जाता है, तथा मध्य पिण्ड का निर्माण नहीं हो पाता है। सम्पीडन बल जितना ही अधिक तीव्र होता है, पर्वतीकरण में उतनी ही अधिक जटिलता आती है। कभी-कभी वलन की ग्रीवा (Jugular) टूट कर दूसरे वलन पर चढ़ जाती है, जिस कारण ग्रीवाखण्ड (nappe) का निर्माण होता है।

कोबर ने अपने विशिष्ट मध्य पिण्ड (Typical median mass) के आधार पर विश्व के वलित पर्वतों की संरचना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। टेथीज भूसन्नति के उत्तर में यूरोप का स्थल भाग तथा द० अफ्रीका का दृढ़ भूखंड था। इन दोनों — अग्रदेशों के आमने-सामने सरकने के कारण अल्पाईन पर्वत श्रृंखला का निर्माण हुआ। अफ्रीका के उत्तर की ओर सरकने के कारण बेटिक कार्डिलरा, पेरेनीज प्राविन्स श्रेणियाँ, मुख्य आल्पस, कार्पेथियन्स, बाल्कन पर्वत तथा काकेशस का निर्माण हुआ, इसके विपरीत यूरेशियन दृढ़ भूखण्ड के दक्षिण की ओर खिसकने के कारण एटलस, एपीनाइन्स, डिनाराइड्स, हेलेनाइड्स, टाराइड्स आदि पर्वतों

का निर्माण हुआ। कार्पेथियन्स तथा दिनारिक आल्पस के मध्य वलन से अप्रभावित हंगरी का मैदान मध्य पिण्ड का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसी तरह पैरेनीज श्रेणियों तथा एटलस के मध्य रूम सागर का भाग एक मध्य पिण्ड है। टारस तथा पाण्टिक श्रेणियों के मध्य अनातोलिया का पठार, एल्बुर्ज और जेग्रोस पर्वतों के बीच ईरान का पठार, हिमालय तथा कुनलुन के बीच तिब्बत का पठार, पश्चिमी द्वीप समूह के बीच पर्वत तथा मध्य अमेरिकी श्रेणी के बीच कैरेबियन सागर, वासाच श्रेणियों तथा सियरा नेवादा के मध्य 'बेसिन रेन्ज क्षेत्र' (संयुक्त राज्य अमेरिका) आदि मध्य पिण्ड के उदाहरण हैं।

इस तरह कोबर ने अपने सिद्धांत में 'मध्य पिण्ड' की कल्पना करके पर्वतीकरण को उचित ढंग से समझाने का प्रयास किया है तथा 'मध्य पिण्ड' की यह कल्पना कोबर के विशिष्ट पर्वत निर्माण स्वरूप की अच्छी तरह व्याख्या करती है।

यद्यपि वर्तमान समय तक भूगर्भवेत्ताओं ने चार प्रमुख पर्वतीकरण के युगों का पता लगाया है, परंतु कोबर ने ऐसे 6 युगों का उल्लेख किया है। इनमें तीन घटनाएँ कैम्ब्रियन युग से पहले घटित हुई मानी गयी हैं तथा इनके विषय में बहुत कम ज्ञान है। दो पर्वतीकरण के बीच एक शान्त काल होता है, जिस समय पर्वत निर्माण रुक जाता

है।

हिमालय के निर्माण के विषय में कोबर ने बताया है कि पहले टेथीज सागर था, जिसके उत्तर में अंगारालैण्ड तथा दक्षिण में गोण्डवानालैण्ड अग्रदेश के रूप में थे।

इयोसीन युग में दोनों आमने सामने सरकने लगे, जिस कारण टेथीज के दोनों किनारों पर तलछट में वलन पड़ने से उत्तर में कुनलुन पर्वत तथा दक्षिण में हिमालय की उत्तरी श्रेणी का निर्माण हुआ। दोनों के बीच तिब्बत का पठार मध्य पिण्ड के रूप में बचा रहा। आगे चलकर मध्य हिमालय तथा लघु शिवालिक श्रेणियों का भी निर्माण हो गया।

**आलोचना :-** यद्यपि कोबर का भूसन्नति सिद्धांत पर्वत निर्माण से संबंधित कई तथ्यों का उचित उल्लेख करता है, तथापि कुछ स्थानों पर दोष भी पाए जाते हैं—

आलोचना

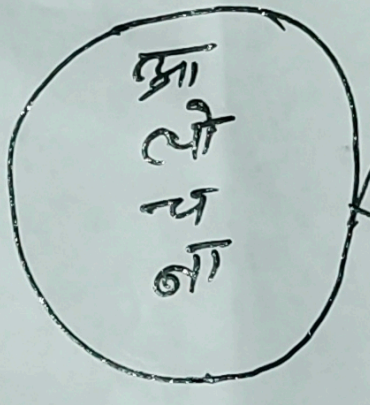

(1) कोबर द्वारा वर्णित पृथ्वी के संकुचन से उत्पन्न बल, पर्वत निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं है।

(2) पूर्व-पश्चिम फैले पर्वतों (आल्पस, हिमालय) का स्पष्टीकरण तो हो जाता है, परंतु उत्तर-दक्षिण फैले पर्वतों का — स्पष्टीकरण नहीं हो पाता है।

आ
लो
च
ना

(3) कोबर के अनुसार भूसन्नति के दोनों पार्श्व सरकता है, जिसे इन्होंने 'पृष्ठ प्रदेश' (Backland) कहा है तथा दूसरा पार्श्व अपनी जगह पर स्थिर रहता है, जिसे इन्होंने अग्रदेश (Foreland) कहा है। हिमालय की उत्पत्ति के संबंध में कोबर का मत अधिक सत्य लगता है क्योंकि प्रायद्वीपीय भारत के स्थिर दृढ़ भूखण्ड का ऊपर में खिसकना तर्क संगत नहीं है।

अब यह आलोचना मान्य नहीं है प्लेट टेक्टानिक सिद्धांत के आधार पर प्रायद्वीपीय भारत (Indian Plate) का ऊपर की ओर संचलन हुआ था। आज भी यह संचलन सक्रिय है।